UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 34 डॉ० राजेन्द्र प्रसाद (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बचपन से ही अध्ययनशील स्वभाव के थे। इन्होंने अपने शैक्षिक जीवन की सभी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में पास की। सन् 1915 ई० में कानून की परीक्षा में ये पाँच प्रांतों में प्रथम आए। मेधावी छात्र होने से इन्हें अनेक छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई। अपने शिक्षार्थी जीवन में ये सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेते थे। सन् 1906 ई० में इन्होंने बिहारी युवा छात्रों का नेतृत्व किया।
पटना हाईकोर्ट में इनकी वकालत बहुत सफल थी। अपनी आय में से ये गरीब विद्यार्थियों की पर्याप्त मदद करते थे। इन्होंने देश सेवा के लिए वकालत छोड़कर स्वदेशी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। सन् 1917 ई० में चम्पारन सत्याग्रह हुआ, जो भारत का प्रथम किसान आन्दोलन था। इसमें राजेन्द्र ने अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया, जिससे अँग्रेजों को घुटने टेकने पड़े, इस आन्दोलन ने राजेन्द्र प्रसाद और बिहार को सारे देश में ख्याति दिलाई।।

सन् 1934 ई० में बिहार भूकम्प के समय इन्होंने अपनी बेजोड़ संगठन-शक्ति का परिचय दिया। बीमार होते हुए भी इनसे जनता की पीड़ा देखी नहीं गई और इन्होंने तत्परता से जनता के लिए भोजन, कपड़े और दवाइयाँ एकत्र कीं।

सन् 1934 ई० में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। उनकी देशभक्ति, सच्चाई और अमूल्य त्याग के लिए,जनता ने इन्हें देशरत्न की उपाधि दी। सन् 1952 के आम चुनावों में स्वाधीन भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए। ये सन् 1962 ई० तक लगातार दो बार भारत के राष्ट्रपति रहे। राष्ट्रपति भवन में पहुँचकर भी इनकी सरलता, सादगी और संस्कृति में गहन आस्था कम नहीं हुई।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को सामान्यत: कभी क्रोध नहीं आता था। इनकी स्मरण-शक्ति बहुत तेज थी। हिन्दी को राजभाषा बनाने का श्रेय इनको ही जाता है। इन्होंने स्वयं भी कई ग्रन्थ लिखे। इनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं- 'आत्मकथा', 'चम्पारन में सत्याग्रह', 'इण्डिया डिवाइडेड', 'महात्मा गांधी एवं 'बिहार रेमिनिसन्सेज', 'बापू के कदमों में', संपादन 'साप्ताहिक देश', संस्थापक 'लॉन्वीकली'।
सन् 1962 ई० में राष्ट्र ने इन्हें 'भारत रत्न' की सर्वश्रेष्ठ उपाधि से विभूषित किया। 28 फरवरी, सन् 1963 ई० को पटना के सदाकत आश्रम में इनका देहान्त हो गयी।

https://www.evidyarthi.in/